Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=211
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY 2023, VOL-11/57

शिक्षा, आधुनिकता और पीढ़ी अंतराल

विजय कुमार यादव
(शोध छात्र), शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र *- 442001*,
ई. मेल- *vijay123bhu@gmail.com*

Paper Received On: 21 May 2023
Peer Reviewed On: 27 May 2023
Published On: 1 June 2023

शिक्षा एक व्यापक संकल्पना है जिसे भिन्न-भिन्न संदर्भों में अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया गया है। शिक्षा के मायने और उसके उद्देश्य अलग-अलग कालखंडों, भौगोलिक सीमाओं, सामाजिक सांस्कृतिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के संदर्भ में भिन्न-भिन्न ढंग से निश्चित और निर्धारित किए गए हैं । कृष्ण कुमार ने अपने एक व्याख्यान के दौरान शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शिक्षा के उद्देश्य किशोर/किशोरियां, उनके माता पिता, समाज और संस्कृति के लिए अलग-अलग हो सकते हैं (कुमार, 2020)। इस पृष्ठभूमि में यह लेख बुजुर्गों और किशोरों को शोध का भागीदार बनाते हुए, इस उद्देश्य को संबोधित करता है कि कैसे अलग-अलग पीढ़ियों में शिक्षा से अपेक्षाएं बदलती रहती हैं। यह शोध पत्र शोधार्थी के वर्तमान शोध कार्य पर आधारित है। इस शोध अध्ययन हेतु वाराणसी जनपद के जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्रतापपुर गांव का चयन क्षेत्र के रूप किया गया है। इस शोध क्षेत्र से कुल नौ(9) वृद्धों (यहाँ वृद्धों से तात्पर्य केवल दादा-दादी से है), बारह(12) किशोर एवं बारह (12) किशोरियों का चयन भागीदार के रूप में किया गया। भागीदारों का चयन उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया गया है। आकड़ों के संकलन हेतु अर्द्धसंरचित साक्षात्कार एवं केंद्रित समूह चर्चा का उपयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर इस शोध-पत्र को तैयार किया गया है।

स्वतंत्रता के बाद से भारतीय गांव, गांव की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शिक्षा में निरंतर बदलाव आया है(कुमार, 2018)। भारत की जनगणना रिपोर्टों से स्पष्ट होता है कि भारत के गांव और

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

गांव की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। यह केवल जननांकिकीय वृद्धि नहीं है बल्कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ गांव की सामाजिक और आर्थिक संरचना में भी बदलाव हुआ है। गांव तक बिजली की पहुंच, यातायात के संसाधनों का विकास, औद्योगिक उपकरणों, विनिर्मित जीवनोंपयोगी एवं खाद्य वस्तुओं तथा तकनीकी और मीडिया की पहुंच ने भारत के गांव को आधुनिक समाज से जोड़ दिया है (शर्मा, 1970; कुमार, 2014; मंजुनाथ, 2014)। जननांकिकीय, सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक बदलावों के साथ-साथ ग्रामीण भारत की शिक्षा में भी निरंतर बदलाव हुआ(जोधका एवं अन्य, 2019; नवानी, 2018)। ग्रामीण शिक्षा में हुए बदलावों में गांव में विद्यालयों का खुलना, विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों की नियुक्ति, कृषि और व्यावसायिक शिक्षा जैसे पाठ्यक्रमों का आरम्भ होना प्रमुख है। भारत की विभिन्न शिक्षा नीतियों में किए गए प्रावधानों, मध्याह्न भोजन योजना, शिक्षा का अधिकार क़ानून एवं सर्व शिक्षा अभियान जैसे योजनाओं एवं कार्यक्रमों ने ग्रामीण शिक्षा में व्यापक स्तर पर परिवर्तन आया है। इस प्रकार के परिवर्तनों ने ग्रामीण समाज को शहरी और आधुनिक औद्योगिक समाज से जोड़ने का कार्य किया। इन सभी बदलावों ने ग्रामीणों की शिक्षा और उनके शिक्षा के उद्देश्यों को भी बदला है । कृष्ण कुमार ने अपने एक व्याख्यान के दौरान शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शिक्षा के उद्देश्य किशोर/किशोरियां, उनके माता पिता, समाज और संस्कृति के लिए अलग-अलग हो सकते हैं (कुमार, 2020)। प्रत्येक व्यक्ति और समाज के लिए शिक्षा का उद्देश्य उस व्यक्ति और समाज के आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुरूप बदलता रहता है। इस पृष्ठभूमि में यह शोध-पत्र आधुनिक होते भारतीय गांव में बुजुर्गों(दादा-दादी) और किशोर/किशोरियों की शिक्षा की अपेक्षाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए अलग-अलग पीढ़ियों में शिक्षा से आपेक्षाओं में हो रहे बदलाव को रेखांकित करता है।

शिक्षा से बुजुर्गों (दादा-दादी) की अपेक्षाएं

प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़े इस ओर संकेत करते हैं कि ग्रामीण बुजुर्गों और किशोर/किशोरियों की शिक्षा से अपेक्षाएं भिन्न-भिन्न हैं। यद्यपि प्रतापपुर गांव के बुजुर्गों और किशोर/किशोरियों के लिए शिक्षा के मायने में कोई अंतर नहीं दिखाई देता तथापि शिक्षा के उद्देश्यों को लेकर दोनों में स्पष्ट अंतर

देखा जा सकता है। बुजुर्गों द्वारा शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण मुख्यतः उनके स्वयं के विद्यालयी एवं व्यवहारिक जीवन के अनुभव के आधार पर किया जाता है। उदाहरण स्वरूप आप भाई लाल कुमार के शिक्षा संबंधी विचारों को देख सकते हैं-

"हमारे जमाने में पढ़ने की इतनी अच्छी व्यवस्था नहीं थी। शिक्षा प्राप्त करना बहुत कठिन था। न ठीक से कापी किताब मिलता था और न इतने स्कूल थे। गांव में बस यही एक प्रतापपुर स्कूल था बस, वह भी दूसरे का घर किराए से लेकर उसी में चलता था। लेकिन यह था कि पढ़ाई-लिखाई में बहुत कड़ाई होती थी। जो ठीक से नहीं पढ़ता, उलटा-सीधा काम करता था, उसे गुरु जी बहुत मारते थे। जब मार पड़े तब दिमाग चले शुरू करे। लेकिन, जो गुरु जी का मार सह गया। उ कुछ न कुछ बन गया। कहीं नौकरी पा गया, तो कहीं और काम पा गया। गुरु जी पढ़ईबो करें, मरबो करें, जो समय से न आवे, जिनके अंदर शिष्टाचार न रहे ओके बहुत मारें। जे गुरु जी का और माई-बाबू का बात न माने, उ पढ़ भी न पावे"।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि बुजुर्गों के समय में गांव में शिक्षा के न पर्याप्त संसाधन थे और न ही शिक्षा कि संस्थाएँ, किंतु वे यह बात भी स्वीकार करते हैं कि अभाव के बावजूद तत्कालीन शिक्षा आज की शिक्षा की तुलना में बेहतर थी। उनका मानना है कि इसका मुख्य कारण उस समय का कठोर अनुशासन था। अर्थात वे कठोर अनुशासन को शिक्षा के लिए आवश्यक मानते हैं। उनका मानना है कि बिना कठोर अनुशासन के शिक्षा संभव नहीं है। उनका यह भी मानना है कि तत्कालीन शिक्षा से किशोर/किशोरियों में शिष्टाचार और संस्कार आता था। शीतला प्रसाद मिश्र इसका समर्थन करते हैं और इसमें आगे जोड़ते हैं कि आज की शिक्षा किशोर/किशोरियों को अनुशासन और संस्कार प्रदान करने में नाकाम हो रही है। इसके साथ ही वे शिक्षा से यह अपेक्षा रखते हैं कि शिक्षा किशोर/किशोरियों में ऐसे कौशलों का विकास करे जिससे वे सामाजिक-आर्थिक रूप से संपन्न हो सकें। इसके समर्थ में एक अन्य भागीदार का कथन सकते हैं-

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

"...आजकल के लड़िकन का पड़त-लिखित हैं, इनके अंदर तो कौनो संस्कार ही नहीं, न माई-बाबू, न दादा-दादी के इज्जत और न गुरु के इज्जत। खाली खाना, स्कूल, मोबाइल, कोई काम कह दें, तो सुनबे नहीं करते। इज्जत-मर्जात क कौनो चिंता नहीं, पढ़ाई लिखाई का मतलब संस्कार हो, इज्जत-मर्जात क लाज हो। तब न समाज बनी, कमाए-खाए क हुनर आई। अच्छा शिक्षा लेइहैं तबै अच्छा जीवन जी पइहैं।"

उपर्युक्त विचार इस ओर स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि इन बुजुर्गों के विचार में शिक्षा के जो मायने हैं वे उनके निजी जीवन के अनुभवों और उनके समय के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से जुडे हुए हैं। यहां यह भी स्पष्ट है कि बुजुर्ग शिक्षा द्वारा किशोर/किशोरियों के मानसिक और सांवेगिक विकास के साथ-साथ उन्हें शारीरिक रूप से भी सशक्त बनाने की इच्छा रखते हैं। वे शिक्षा द्वारा किशोर/किशोरियों में मूल्यों का विकास करना चाहते हैं, उनमें स्व-अनुशासन का विकास करना चाहते हैं और शिक्षा द्वारा ऐसे कौशलों का विकास करना चाहते हैं जिससे किशोर/किशोरियों को अपना जीविकोपार्जन करने में कोई कठिनाई न हो। ग्रामीण बुजुर्ग शिक्षा द्वारा किशोर/ किशोरियों के अच्छे जीवन की कामना करते हैं। 'अच्छे जीवन' से उनका तात्पर्य भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त ऐसे सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से संपन्न जीवन से है, जिसमें किशोर/किशोरियां अपने समाज एवं समूह में निहित मूल्यों का पालन करता है और समाज में उसका मान-सम्मान बना रहता है।

किशोर/किशोरियों की शिक्षा से अपेक्षाएं

किशोर/किशोरियों के विचारों में शिक्षा को मुख्यतः सरकारी नौकरी प्राप्त करने का साधन माना जा रहा है। गांव के अधिकांश किशोर/किशोरियां जो आठवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थी हैं, उनमें से ज्यादातर किशोर/किशोरियां डाक्टर, इंजीनियर और शिक्षक के रूप में अपने भविष्य को परिकल्पित करते है, तो वही शिवा, अखिलेश एवं शनि रेलवे तथा ऋचा और श्रेया बैंकिंग सेक्टर में नौकरियां प्राप्त कर अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। राजवीर ने आईएएस बनकर देश सेवा की इच्छा भी व्यक्त की। कुछ किशोर/किशोरियां, खासकर किशोरियों ने 'शिक्षिका' के रूप में अपने भविष्य को संवारने

की बात करते हैं। ऋतु भी शिक्षिका बनना चाहती है क्योंकि उसके मामा की लड़की शिक्षिका बनकर सम्मान प्राप्त कर रही है। रोहन ग्यारहवीं का छात्र है और साथ ही वह अपने पिता के साथ दूध का व्यापार भी करता है। रोहन बारहवीं के बाद अपने पैतृक कार्य 'दूध के व्यापार' को ही आगे बढ़ाना चाहता है और इसी व्यापार को व्यापक पैमाने पर करने की इच्छा रखता है। वैसे तो, दसवीं के बाद से ही उसकी पढ़ने की इच्छा नहीं थी किंतु वह बारहवीं भी इसलिए पास करना चाहता है क्योंकि उसके पिता चाहते हैं कि वह इण्टर-मीडिएट पास कर ले, जिससे उसके विवाह में कोई अड़चन न आए। इसी प्रकार लक्ष्मी का मानना है कि कंपटीशन बहुत अधिक होने से उसे नौकरी नहीं मिल सकती है। किसी तरीके से बह बी.ए. की पढ़ाई पूर्ण करना चाहती है। पढ़ाई के साथ-साथ वह सिलाई कढ़ाई का काम भी सीख रही है ताकि उसके पिता उसके लिए बेहतर जीवन साथी की तलाश कर सकें। लक्ष्मी के अनुसार बेहतर जीवनसाथी से तात्पर्य एक ऐसे जीवनसाथी से है जो सरकारी नौकरी करता हो और शराब न पीता हो। इसी प्रकार के जीवनसाथी की कामना प्रिया और सुनीता भी करती हैं। प्रिया के ही शब्दों में *" इतना मेहनत से पढ़ रही हूँ, सुबह शाम घर में भी काम करती हूँ , तो नौकरी तो मिलेगा या नहीं मिलेगा, लेकिन ठीक से पढ़ लूंगी तो शादी-व्याह तो ठीक घर में होना ही चाहिए। मैं चाहती हूँ कि मेरा पति भले कम कमाए लेकिन उसका नेचर अच्छा हो, नशेड़ी-गजेड़ी तो न हो। चाहते तो हैं कि सरकारी नौकरी वाला ही हो, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि सरकारी नौकरी वाला हो तो नशा करता हो। पति ही सही नहीं रहेगा तो नौकरी और पैसे का क्या होगा।"* स्पष्ट है कि गांव की शिक्षित किशोरियां अपने पति के रूप में सरकारी नौकरी प्राप्त लड़कों को प्राथमिकता देती हैं किंतु यह बात भी गौर करने योग्य है कि सरकारी नौकरी वाले पति के साथ-साथ वे अपने पति से अपने प्रति प्रेम और बेहतर व्यवहार की कामना करती हैं. वे चाहती हैं कि उनका पति किसी प्रकार का नशा न करता हो। यही उनके लिए आदर्श जीवनसाथी की परिभाषा है।

गांव के अधिकांश किशोर/किशोरियां शिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरियों में अपना भविष्य तलाश रहे है। लेकिन, ग्रामीण किशोर/किशोरियों का एक वर्ग वह भी है जो सरकारी नौकरियों से इतर विभिन्न व्यवसायों में अपना भविष्य देख रहा है। जिसमें किशोर प्रायः अपने पैतृक व्यवसाय को ही आगे बढ़ाना

चाहता है तो किशोरियां ऐसे कार्य करना चाहती हैं जो घरेलू स्तर पर उनके लिए उपयोगी साबित होंगी, जैसे- सिलाई-कढ़ाई का कार्य। उल्लेखनीय है कि एक तरफ किशोर/किशोरियां शिक्षा को जीवनोपयोगी मानते हैं तो दूसरी तरफ अपने लिए उत्तम जीवन साथी की तलाश का साधन मानते हैं। गांव के कुछ ऐसे भी किशोर है जो शिक्षा के प्रति उदासीन हैं, क्योंकि वे शिक्षा में अपने भविष्य कि परिकल्पना नहीं करते हैं। उदाहरण के रूप में राहुल शिक्षा के प्रति अपनी अरुचि इसलिए व्यक्त करता है, क्योंकि उसके विचार में शिक्षा में संघर्ष अधिक है और नौकरी के आसार उसके लिए दिखाई नहीं देते। इस संबंध में वह कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत करता है. राहुल के शब्दों में- *"बगल के गांव के सूरज भैया और उनके साथ राजू , सुरेश इलाहाबाद गए थे, और हमारे गांव से नागेश और शिवप्रकाश भी गए थे। दो-तीन साल पढ़े-लिखे किंतु उनका कुछ नहीं हुआ, मां बाप का पैसा नुकसान करके घर चले आए, तो ऐसी पढ़ाई का क्या फायदा, इससे अच्छा तो शहर में जाकर किसी कंपनी में नौकरी करते, या कुछ और काम धंधा करते, तो अब तक कितना पैसा कमाया होता।"* यहां स्पष्ट है कि गांव के किशोरों शिक्षा प्राप्ति के पश्चात नौकरी हेतु होने वाले संघर्षों से भी अत्यधिक चिंतित हैं।

स्पष्ट है कि गांव के किशोरों शिक्षा प्राप्ति के पश्चात नौकरी हेतु होने वाले संघर्षों से अत्यधिक चिंतित हैं, और वे मानते हैं की इन संघर्षों के बाद भी उनका भविष्य सुरक्षित नहीं है। अतः वे इन संघर्षों के बजाए दूसरे माध्यमों से अपनी जीविका के लिए आय अर्जित करना चाहते हैं। इसके साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मूल आधार कृषि और कृषिगत व्यापार के प्रति ग्रामीण किशोर/किशोरियों में उदासीनता है। वे कृषि एवं कृषि से जुड़े व्यापार में अपने भविष्य की निर्मित भी नहीं करना चाहते हैं। मोहन का ही उदाहरण लें – मोहन के दादा एक बड़े काश्तकार हैं और मोहन का परिवार एक संयुक्त परिवार है। आज भी उनके पास लगभग दस एकड़ की काश्तकारी है। मोहन के पिता और चाचा भी कृषक ही हैं। कृषि से गेहूं, चावल, चना, मटर एवं कुछ अन्य फसलों की पैदावार होती है। इन्हें ही बेच कर उनका घर-बार, उसी से पढ़ाई -लिखाई का खर्च चलता है एवं अन्य जरूरतें पूरी होती हैं। कभी-कभी समय से फसल न बिकने पर घर में आर्थिक समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। इस समस्या से निपटने

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

के लिए उसके चाचा जी ने गांव में ही एक किराने की दुकान भी खोल ली है। मोहन का मानना है कि अब गांव और कृषि में कुछ नहीं रखा है अतः वह इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास करने के पश्चात कोटा (राजस्थान) जाकर इंजीनियरिंग की तैयारी करना चाहता है। आगे वह जोड़ता है कि उसके पिता और दादा की भी यहीं इच्छा है। उसके सभी भाई-बहन अभी छोटे हैं तो उनकी स्कूलिंग के बाद उनके बारे में सोचा जाएगा, यद्यपि, उसका भाई सोहन डाक्टर और उसकी बहन श्वेता शिक्षिका बनाने की इच्छा व्यक्त करती है। इसी प्रकार उसके चाचा का लड़का जो अभी आठवीं में है, वह भी इंजीनियर बनना चाहता है। इसी प्रकार के विचार दसवीं के छात्र सोनू और ग्यारवीं के छात्र पवन के भी हैं। जहां, सोनू शिक्षक बनाना चाहता है तो पवन सेना में जाकर देश कि सेवा करना चाहता है। यद्यपि, इनके परिवारों के पास इतनी बड़ी काश्तकारी नहीं है।

शिक्षा में तकनीकी उपकरणों और मीडिया के बढ़ते प्रयोग पर बुजुर्गों और किशोर/किशोरियों के अभिमत

शिक्षा में तकनीकी उपकरणों और मीडिया के प्रभाव किशोर/किशोरियों और बुजुर्गों पर अलग-अलग ढंग से दिखाई पड़ते हैं। गांव के परिप्रेक्ष्य में देखें तो शिक्षा में तकनीकी उपकरणों और मीडिया के उपयोग और प्रभाव को लेकर गांव के बुजुर्ग दो तरह के विचार प्रकट करते हैं- प्रथम समूह के बुजुर्ग तकनीकी उपकरणों और मीडिया के प्रयोग व इनके प्रभाव को शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण और आवश्यक मानते हैं, और ग्रामीण किशोर किशोरियां इसी विचारधारा का समर्थन करते हैं. उदाहरण के लिए- अनन्या के दादा-दादी का मानना है कि यदि तकनीकी उपकरणों जैसे मोबाइल, लैपटॉप या टीवी का सही ढंग से प्रयोग किया जाए तो यह किशोर/किशोरियों की शिक्षा में अत्यधिक सहायक और महत्वपूर्ण है। इसके समर्थन में उन्होंने कोरोना कालीन परिस्थितियों में अनन्या की शिक्षा में मोबाइल और लैपटॉप की उपयोगिता को बताते हुए कहा *"इस कोरोना में, सब स्कूल बंद हो गए, लेकिन अनन्या के स्कूल वाले, ऑनलाइन माध्यम से पूरा पढ़ाए-लिखाए, अनन्या अपने मम्मी के मोबाइल से अपने टीचर से बात करती रही, कभी-कभी लैपटॉप से भी जुड़ जाते, बहुत सी जानकारी मोबाइल और लैपटॉप से मिला, हम लोगों ने भी इसमें अनन्य की सहायता की, यही कारण है कि अनन्या की पढ़ाई में कोई बाधा नहीं*

आया। हम लोग भी जहां तक संभव हो रहा था ऑनलाइन माध्यम से जो काम मिला, उसमें अनन्या का सहयोग किया। तो मोबाइल और लैपटॉप का सही उपयोग करें, तो यह बहुत अच्छी चीज है। हां, आज-कल के कुछ किशोर/किशोरियां हैं, मोबाइल और लैपटॉप का दुरुपयोग करते हैं, दिनभर वीडियो, मूवी देखा करते हैं, गार्जियन को भी ध्यान देने चाहिए।" उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि अनन्या के दादा-दादी सूचना और प्रौद्योगिकी को किशोर/किशोरियों की शिक्षा में आवश्यक मानते है. उनका यह भी मानना है कि सूचना एवं प्रौद्योगिकी एवं मीडिया का किशोर एवं किशोरियों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव भी होता है किन्तु इसके लिए वे किशोर/किशोरियों के अभिभावकों को जिम्मेदार मानते हैं. इसी प्रकार के विचार पन्नालाल के भी है जो पेशे से अध्यापक रहे हैं। उनका भी मानना है कि तकनीकी उपकरणों और मीडिया के सही प्रयोग से किशोर/किशोरियों को शिक्षा में लाभ होता है। वे बताते हैं " मेरा पोता ग्यारहवीं का छात्र है। मैथ, केमिस्ट्री और फिजिक्स के तमाम सवालों को वह गूगल और यूट्यूब से ही पढ़ लेता है " । इस प्रका वे यह मानते हैं कि तकनीकी उपकरणों और मीडिया का यदि उचित ढंग उपयोग किया जाए तो यह किशोर/किशोरियों के शिक्षा में महत्वपूर्ण साबित हो सकता है.

द्वितीय समूह के बुजुर्ग तकनीकी उपकरणों के प्रयोग और मीडिया को किशोर/किशोरियों की शिक्षा में बाधक मानते हैं। जहां तकनीकी उपकरणों से उनका तात्पर्य मुख्यता मोबाइल, कंप्यूटर और टीवी से है। इनका मानना है कि मोबाइल और टीवी युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है। उपकरणों के समर्थन में सरकार एवं अन्य माध्यमों से जो प्रचार प्रसार किया जाता है कि इससे किशोर/किशोरियां पढ़ेंगे, उनका विकास होगा इसके ठीक विपरीत किशोर/किशोरियां इनके प्रभाव में शिक्षा में कमजोर होते जा रहे हैं । उदाहरण के तौर पर तीरथ प्रसाद मिश्र के विचार को देख सकते हैं – "...*का बताई बच्चा! मोबाइल लड़िकन के एकदम बर्बाद कर देता, इ सब दिन-भर खाली गेम खेललें औ वीडियो देखलें, समय मिली तो टीबी देखिहें, त का पढाई -लिखी करिहैं"* कथन से स्पष्ट है कि भागीदार तकनीकी उपकरण और मीडिया के रूप में केवल मोबाइल और टेलीविज़न को देख रहे हैं, और यह मान रहे हैं कि तकनीकी उपकरण और मीडिया बच्चों की शिक्षा में बाधक का कार्य कर रही है। इसका समर्थन शीतला प्रसाद

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मिश्र भी करते हैं. वे बताते हैं- *"आजकल क लईका मोबाइल में जब लीन हो जाने, त कुछ कहा तो सुनबे न कैरिहैं, मोबाइल में गेम खेलिहैं, वीडियो देखें, शाम के टीवी देखें, कुछ कहा, डांटा, तो आंख दिखाइहैं"।* यहां भागीदार यह मानते हैं कि मोबाइल ने न सिर्फ किशोर/किशोरियों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है बल्कि इसके प्रभाव में किशोर/किशोरियां संस्कार एवं मूल्य भी खोते जा रहे हैं। भाई लाल इसी में आगे जोड़ते हैं- *"... यदि बच्चों से मोबाइल छीन लिया जाए, ले लिया जाए, तो पढ़ेंगे-लिखेंगे नहीं, कहेंगे यूट्यूब पर हम पढ़ रहे हैं, लेकिन थोड़ी देर तक तो पढ़ेंगे फिर हमारे हटते ही मूवी, वीडियो देखने लगते हैं। कभी-कभी दिन भर गेम खेलेंगे"।* उपरोक्त कथनों से स्पष्ट है कि ग्रामीण बुजुर्ग तकनीकी उपकरण और मीडिया के रूप में मोबाइल, कंप्यूटर और टेलीविज़न को चिह्नित करते हैं, और इन्हें किशोर/किशोरियों की शिक्षा में बाधक मानते हैं। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण किशोर/किशोरियां बुजुर्गों के इस विचार का समर्थन नहीं करते हैं। उनका मानना है कि तकनीकी उपकरणों और मीडिया के प्रयोग द्वारा उनके लिए शिक्षा सहज और सरल हुई है।

निष्कर्ष:

आज ग्रामीण परिवेश में रहने वाले वृद्ध एवं किशोर/किशोरियां शिक्षा को सशक्तिकरण का साधन मानते हैं। वे शिक्षा के द्वारा जीविकोपार्जन कर सामाजिक गतिशीलता को बनाए रखना चाहते है। इस प्रकार के सामाजिक गतिशीलता के लिए ग्रामीण बुजुर्गों एवं ग्रामीण किशोर/ किशोरियों द्वारा शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आधुनिक होते गांव में जहां एक ओर ग्रामीण बुजुर्ग शिक्षा में सूचना और तकनीकी के उपकरणों की उपयोगिता और महत्ता को स्वीकार करते हैं, वहीं दूसरी तरफ बुजुर्गों में किशोर/किशोरियों द्वारा नकारात्मक गतिविधियों में इन संसाधनों के उपयोग के कारण चिंता भी व्यक्त की जा रही हैं। इसके एक प्रमुख कारण रूप में वे इन किशोर/किशोरियों के पालकों के गैर जिम्मेदाराना रवैया को भी चिह्नित करते हैं। बुजुर्गों का यह भी मानना है कि यदि पालक के देख-रेख में किशोर/किशोरियों द्वारा इन तकनीकी उपकरणों का प्रयोग किया जाए तो परिणाम सकारात्मक मिलेगा। जहां आज शिक्षा को जीविकोपार्जन और सशक्तिकरण के रूप में देखा जा रहा है, वहीं वर्तमान शिक्षा को लेकर बुजुर्गों के मन में कई प्रकार की चिंताएं भी हैं। उनका मानना है कि वर्तमान शिक्षा भले ही किशोर/किशोरियों को नौकरी के लिए तैयार कर रही है, लेकिन वह किशोर/किशोरियों में स्व-अनुशासन का विकास नहीं कर रही है, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास नहीं कर रही है, उनमें किसी ऐसे

हुनर को पैदा नहीं कर रही है जिससे यदि नौकरी न मिले तो वे अपना जीवन आसानी से जी सकें, सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन कर सकें। अतः वे शिक्षा से यह अपेक्षा रखते हैं कि शिक्षा किशोर/किशोरियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास करे और उनमें ऐसे कौशलों का विकास करे जिससे वे सामाजिक आर्थिक रूप से संपन्न हो सकें और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। वहीं ग्रामीण किशोर/किशोरियों के विचारों में शिक्षा द्वारा सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करना अधिक महत्वपूर्ण है। किशोर/किशोरियों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के मूल आधार रहे कृषि के प्रति उदासीनता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। वे कृषि से इतर नौकरी एवं अन्य व्यवसायों के माध्यम से ही अपनी आर्थिक उन्नति करना चाहते हैं। उनका मानना है कि नौकरी मिलेगी तो सम्मान भी मिलेगा, आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी और जीवनसाथी भी अच्छा मिलेगा। अर्थात ग्रामीण युवा पीढ़ी शिक्षा से नौकरी और नौकरी के माध्यम से ही अपना सामाजिक-आर्थिक स्थिति बदलने की सोच रखती हैं।

संदर्भ:

आर्किटेक इंडिया. (2023 अप्रैल 19). शिक्षा का उद्देश्य और आज की व्यवस्था. *retrieved from https://www.youtube.com/watch?v=9bfMWtATB_A*

कुमार, के. (2014). रूरलिटी, मॉडर्निटी एंड एजुकेशन. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, *49(22), 38-43*

कुमार, एस. (2018). *बदलता गांव बदलता देहात: नई सामाजिकता का उदय*. नई दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

गुप्ता, डी. (2018). भारतीय गांव: कृषि और संस्कृति के बदलते प्रतिमान. *सामाजिक विमर्श*, *1*(1), 14-30.

जोधका एस.एस., एंड कुमार ए .(2019). नॉन-फॉर्म इकोनॉमी इन मधुबनी,बिहार: सोशल डाइनेमिक्स एंड एक्सक्लूसनरी रूरल ट्रांसफॉर्मेशन. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, *52* (25 & 26), *14-24.*

नवानी, डी. (2018). एसेसिंग असर 2017: रीडिंग बिटविन द लाइन. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, *53*(8), 14-18.

मंजुनाथ, के. (2014). इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन आन इंडियन रूरल एंड अर्बन लाइफ . इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट साइंस, 5(4), 274-276